INTERNATIONAL RESEARCH JOURNAL OF HUMANITIES AND INTERDISCIPLINARY STUDIES
(Peer-reviewed, Refereed, Indexed & Open Access Journal)
DOI : 03.2021-11278686 ISSN : 2582-8568 IMPACT FACTOR : 6.865 (SJIF 2023)

आधुनिकता और मैथिलीशरण गुप्त के काव्य

(Modernism and Poetry of Maithilisharan Gupt)

प्रा. डॉ. शर्मिला सुमंतराय पटेल
हिंदी विभागाध्यक्ष एवं कार्यकारी आचार्य
श्री रंग नवचेतन महिला आर्ट्स कालेज वालीया
ता. वालीया जि. भरूच

DOI No. 03.2021-11278686 **DOI Link ::** https://doi-ds.org/doilink/09.2023-14373172/IRJHIS2309002

प्रस्तावना :

मैथिलीशरण गुप्तजी आधुनिक युग के प्रतिनिधि कवि है। आधुनिक युग विचार और जीवन पद्धति दोनों से क्रांतिकारी है। आधुनिकता की पहली अनिवार्य शर्त विज्ञान के प्रति प्रेम, रुढ़ियों का विरोध और अपने से भिन्न धर्मो को समझने का प्रयत्न करना, उन्हें समान आदर देना। इसके अनेक उदाहरण गुप्तजी की कविता में मिलते हे।

कई लोग अंग्रेजी जानने को आधुनिकता का पर्यायवाची मानते है। परंतु इस बात से सहमत होना कठिन है क्योंकि क्या सारे अंग्रेजी पढ़े–लिखे लोग सही अर्थो में मन से आधुनिक है। क्या सारे अंग्रेजी न जानने वाले भारत के ९८ प्रतिशत लोग, किसान, मजदूर, कामगार, छोटे–छोटे कारीगर, सब यंत्रो का उपयोग नहीं कर रहे है और क्या अब भी उसी अवस्था में है जैसे सौ–दौ–सौ वर्षो पहले थे ? इन सब प्रश्नों के उत्तर गुप्तजी की कविता में ही पाए जा सकते हे। 'भारत–भारती' में नए युग का स्वागत करते हुए गुप्तजी ने लिखा था –

''हमको समय को देखकर ही नित्य चलना चाहिए,
बदले हवा जब जिस तरह हमको बदलना चाहिए।
विपरित विश्व–प्रवाह के निज नाव जा सकती नहीं,
अब पूर्व की बातें सभी प्रस्ताव पा सकती नहीं।।
व्यवसाय अपने व्यर्थ है अब भव्य यंत्रो के बिना,
परतंत्र है हम सब कहीं अब भव्य यंत्रो के बिना।
कल के हलों के सामने अब पूर्व का हल व्यर्थ है,
उस वाष्प–विद्युद्वेग–सन्मुख देह का बल व्यर्थ है।।''१

गुप्तजी के जीवन और काव्य में आधुनिकता का लक्षण है, उनका प्रजातंत्र में विश्वास। प्रजातंत्र में उनकी आस्था के अनेक प्रमाण उनकी रचनाओं में मिलते है। प्रजातंत्र की एक बड़ी समस्या होती है — अल्पसंख्यकों को संतुष्ट रखना, उन्हें यथोचित प्रतिनिधित्व देना। हिन्दू जाति के अल्पसंख्यक शुद्र या अछूत, दलित ओर हरिजनों के प्रति मैथिलीशरण जी ने अपने काव्य 'हिन्दू' में यह लिखा था —

''रहो न हे हिन्दू, संकीर्ण
न हो स्वयं ही जर्जर—जीर्ण।''२

मातृ मंदिर में गुप्तजी ने लिखा था —

''भारतमाता का मंदिर यह, समता का संवाद जहां
सबका शिव कल्याण यहाँ है, पावै सभी प्रसाद यहां
जाति—धर्म या संप्रदाय का नहीं भेद व्यवधान यहां,
सबका स्वागत, सबका आदर, सबका सम सम्मान यहां।
राम—रहीम, बुद्ध, ईसा का सुलभ एक सा ध्यान यहां,
भिन्न भिन्न भव संस्कृतियों के गुण गौरव का ज्ञान यहां।
नहीं चाहिए बुद्धि वैर की, भला प्रेम उन्माद यहां
सबका शिव कल्याण यहां है, पावे सभी प्रसाद यहां।''३

नारीत्व के प्रति उच्च भावना को प्रमुख रुप से व्यक्त करने इस युग के प्रमुख एवं महान प्रतिनिधि कवि गुप्तजी है। उन्हों ने मुख्य रुप से उपेक्षिता नारी को ही अपने काव्य में चित्रित किया है। 'साकेत' की उर्मिला और कैकेयी, 'यशोधरा' की यशोधरा 'द्वापर' की 'विधृता' ऐसी ही नारी है। 'साकेत' की उर्मिला और कैकेयी का स्वरुप पौराणिक नारियों सा नहीं है, उन पर आधुनिक युग की स्पष्ट छाप है। यहाँ तक कि उर्मिला स्वयं सैन्य संगठन कर लंका प्रस्थान करने के लिए तत्पर होती है। उसमें त्याग भी कम नही है। वह अपने धर रहना उचित समझती है, प्रिय के पथ में विध्न नहीं बनना चाहती —

''कहा उर्मिला ने — हे मन ! तू प्रिय पथ का विध्न न बन।''४

'साकेत' की उर्मिला में आधुनिकता की झलक भी है, प्राचीन रुढ़ियों को त्याग दिया है। उर्मिला के हृदय का औदार्य देखते ही बनता है। उर्मिला की विचारधारा सूरदास की गोपियों से भिन्न है, वह कहती है —

''रह चिर दिन तू हरी भरी
बढ़ सुख से बढ़ सृष्टि सुंदरी।''५

उर्मिला के रुप में नारी की महान मूर्ति के दर्शन होते है। यह उस युग की चेतना का प्रभाव है। 'मृदूनि कुसुमादपि' नारी कितनी कठोर एवं शक्तिमूर्ति धारण कर सकती है, यह देखने योग्य है। नारी का यह रुप श्रृंगारकाल में तिरोहित हो गया था। भारतेन्दु युग में नारी को पुनः नारी रुप में देखने का प्रयत्न हो रहा था और द्विवेदीयुग में नारीत्व के प्रति उच्च भावनाओं की ठोस स्थापना हुई। गुप्तजी ने यशोधरा में नारी का, युग युग की तपस्विनी नारी का बड़ा उदात्त चित्र खींचा है।

''अबला जीवन हाय ! तुम्हारी यही कहानी।
आँचल में है दूध और आँखों में पानी।''६

गुप्तजी की यशोधरा में नारी का विश्व कल्याणी रुप है। नारी पुरुष के मार्ग का विघ्न नही, वरन वह उसकी साधना की पुजारिन है। वह पति को क्षात्रधर्म पालन हेतु रणांगण में प्रस्तुत कर सकती है।

''स्वयं सुसज्जित करके क्षण में,
प्रियतम को प्राणो के प्रण में,
हमी भेज देती है रण में क्षात्र धर्म के नाते।''७

इस प्रकार हम देखते है कि द्विवेदीयुगीन कविता में नारी का स्वतंत्र व्यक्तित्व एवं स्वस्थ रुप है।

आधुनिक युगीन नारी सेवा के क्षेत्र में पुरुषों की भाँति ही आगे बढ़कर कार्य करने में हर्ष का अनुभव करती है। 'साकेत' में इस वैचारिक प्रगति के चिन्ह स्पष्ट गोचर होते है। रणस्थल में जाने को उद्यत उर्मिला को अयोध्यावासी यह कहकर रोक देते है —

''क्या हम सब मर गये हाय ! जो तुम जाती हो,
या हमको आज तुम दीन दुर्बल पाती हो ?''८

तब आंदोलन के समय सेवा व्रत लेने वाली आधुनिक युग की नारी के समान उर्मिला ने भी घायलों की सेवा करने का विचार किया —

''वीरों पर यह योग भला क्यों खोऊँगी मैं
अपने हाथों घाव तुम्हारे धोऊँगी मैं
पानी दूँगी तुम्हें, न पल भर सोऊँगी मैं।''९

'द्वापर' में वर्णित नारद का चरित्र भी सुधारवादी और क्रांतिप्रिय है। परंतु उनकी क्रांति की विशेषता यह है कि वे शांति के लिए क्रांति करना चाहते है। उनकी दृष्टि इसी सूत्र पर केंद्रित होती है कि क्रांति ही जीवन है और संधर्ष के बिना जीवन व्यर्थ है। उनकी कलहप्रियता भी इसी पृष्ठ—भूमि पर विकसित होती है। संधर्षमय जीवन में उनका दृढ़ विश्वास है और उससे ही वे अपने जीवन का मूल्य निर्धारित करने का प्रयत्न है। क्रांति के विषय में उनका कहना है —

''हरिः ओम् पर इसके आगे ?
शांति ? नहीं हो, शांति नहीं।
शांति अंत में आप आयेगी,
व्यर्थ जन्म, जो क्रांति नहीं।''१०

नारद सुधारवादी भी अवश्य है, क्योंकि वे मानते है —

''बिगड़े का सुधार करने से
बढ़कर कोई कार्य नहीं,
किन्तु उसे उपदेश व्यर्थ है,
जो विनाश से बाध्य हुआ।''११

दिवोदास पूर्णत: सुधारवादी विचारधारा के प्रवर्तक ज्ञात होते है कि —हमें देवताओं का सहारा छोड़ स्वयं परिश्रम करने के लिए तत्पर हो जाना चाहिए। बादलों के बिना हम हमारी भूमि गंगाजल के उपयोग से उपजाऊ बना सकते है। उसके लिए अत्यधिक परिश्रम की आवश्यकता है। नये—नये आविष्कार करने का समय आ पहुंचा है। दो पैरोंवाले प्राणी समस्त बाधाओं को मिटाने में समर्थ बन सकता है। उसके लिए हमें किसी देवताओं एवं असुरों की मदद नहीं चाहिए। हमें विश्वास है कि हमारे कर्तव्य के अनुसार हमें यथोचित फल अवश्य मिलेगा। उनके कहने का अर्थ यह है कि कठोर तपस्या में ही इच्छित फल निहित है।

उनके विचार से संसार का निर्माता मनुष्यमात्र ही है जो स्वयं पूर्ण है। वे मनुष्य स्वभाव पर प्रकाश डालते हुए कहते है कि हमें कभी भी निराश नहीं होना चाहिए। साथ ही साथ हमारे हाथों की शक्ति भी क्षीण नहीं होनी चाहिए। आत्म—विश्वास से कार्य करना ही उचित है। उनका कहना है —

''रचा हमीं ने बाहर भीतर यह इतना संसार,
कितना चित्र—विचित्र हमारा एक पृथक परिवार।
नर होकर हम क्यों निराश हों, निज कर नही अशक्त,
राजवंश भी रहे प्रजा के साथ सदा समभक्त।''१२

दिवोदास के समस्त व्यवहारों का परिणाम यह होता है कि सारी प्रजा जागृत होकर परिश्रम का महत्व भी समझने लगती है और अनायास ही दिवोदास के नेतृत्व पर उनका विश्वास हो जाता है। इस तरह उनकी कुशलता पर समस्त प्रजा सन्तोषित होकर राजा का अभीष्ट चिंतन करने में ही अपने को धन्य समझने लगती है। इतना ही नहीं विरुदावली गाकर निरंतर दिवोदास का ही शासन चाहने लगती है।

इससे स्पष्ट होता है कि दिवोदास का चरित्र निर्माण कर कवि ने एक सुधारवादी दृष्किोण सम्मुख प्रस्तुत करने का सफल प्रयत्न किया है। आत्मनिष्ठा, परिश्रमवृति, उदारता, स्वतंत्र चिंतन, लोक कल्याण की भावना मनुष्य के बल में विश्वास, आदि गुणों से दिवोदास के व्यक्तित्व में लोकोत्तरता दृष्टिगत होती है।

'स्वदेश संगीत की कुछ कविता ओं में सामाजिक ह्रास के प्रति क्षोभ व्यक्त करते हुए सामाजिक कुरीतियों — अल्पवय में विवाह, वृद्ध विवाह, छुआछूत आदि को त्याग ने का परामर्श दिया है।

'हिन्दू' में भी कवि ने सामाजिक कुरीतियों — छूआछूत, विधवा, बाल विवाह, जाति बहिष्कार, अपव्यय, रुढ़िवादिता, कलह, फूट आदि और उनसे उत्पन्न जड़ता, व्यक्तिगत निश्चेष्टता, आलस्य, धार्मिक असहिष्णुता, जातीय अनुदारता की ओर ध्यान आकृष्ट कर उनसे मुक्त होने, स्वावलंबी बनने, कर्म और पुरुषार्थ का मार्ग अपनाने का उद्‌बोधन दिया है।

गुप्तजी की सबसे बड़ी आधुनिकता उनकी कविता की सपाट बयानी है। जब चारों ओर छायावाद का बोलबाल था, तब इस तरह की गद्यप्राय, बुद्धि प्रधान, सीधी अभिधावाली कविताएँ लिखना साहस का काम था। लार्ड बायरन नामक अंग्रेजी कवि ने लिखा था कि ''आई लव नाट मैन, दि लेस बट नेचर मोर'' (मैं मनुष्य से कम प्यार नहीं करता, परंतु प्रकृति मुझे अधिक प्रिय है।) छायावादियों की ऐसी ही

स्थिति थी। मगर गुप्तजी कहते है कि प्रकृति का सौंदर्य ठीक है, परंतु मनुष्य मेरा प्रमुख विषय है —

''मनुष्य वही है कि जो मनुष्य के लिए जिए
मनुष्य वही है कि जो मनुष्य के लिए मरे।''१३

संक्षेप में गुप्तजी ने अपनी रचनाओं द्वारा यंत्रो का उपयोग करना, रुढ़ियों का विरोध, और उसके साथ साथ मानवता धर्म की स्थापना करना यही विचार प्रस्तुत किये है जो आधुनिकता के अनिवार्य अंग है, जिसके बिना मनुष्य मात्र की प्रगति असंभव है।

संदर्भ सूची :

१. भारत—भारती— पृष्ठ १७०
२. हिंदू — पृष्ठ ११०
३. मातृ मंदिर —
४. साकेत चतुर्थ सर्ग— पृष्ठ ६२
५. वही नवम् सर्ग— पृष्ठ १९०
६. यशोधरा— पृष्ठ ४०
७. वही— पृष्ठ २०
८. साकेत —द्वादस सर्ग पृष्ठ ३१७
९. वही— पृष्ठ ३१७
१०. द्वापर— पृष्ठ ४५
११. वही— पृष्ठ ४७
१२. पृथ्वीपुत्र— पृष्ठ २०
१३. वही — पृष्ठ २७